



Be Mains Ready

कथा के धरातल पर ऐतहासिक होते हुए भी स्कंदगुप्त क्यों एक आधुनिक नाटक है? तार्किक उत्तर दीजिये।

14 Aug 2019 | रवीजन टेस्ट्स | हिंदी साहित्य

दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

इतिहास के प्रतापप्रसाद का नजरिया उपयोगितावादी था। प्रसाद ने 1928 में स्कंदगुप्त नाम का ऐतहासिक नाटक लिखा। परंतु इस नाटक के लेखन का उद्देश्य अतीत का गौरवगान करना नहीं था बल्कि प्रसाद ऐतहासिक परिस्थिति में आधुनिक समस्याओं को रखकर उनका हल सुझाना चाहते हैं। इसी कारण यह नाटक ऐतहासिक कलेवर का होते भी मूल्यबोध के स्तर पर आधुनिकता को धारण करता है।

स्कंदगुप्त का ऐतहासिक ढांचा सरिप इसलिये रखा गया है क्योंकि प्रसाद इतिहास के प्रेरणा लेना चाहते हैं। यदि इस ऐतहासिक ढाँचे को 1928 के भारत पर आरोपित कर दें तो ऐतहासिकता का आवरण हटने लगता है और राष्ट्रीय चिंताएँ केंद्र में आ जाती हैं। स्कंदगुप्त स्वाधीनता संग्राम के नेता का प्रतीक है। पुष्यमतिर और हूण वदिशी आक्रांताओं अर्थात् ब्रिटिश सत्ता के प्रतीक हैं। बौद्ध-ब्राह्मण संघर्ष उस समय की हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता की अभिव्यक्ति है जबकि भालव और गुप्त साम्राज्य का संबंध आधुनिक कषेत्रवादी प्रवृत्तियों को नकारने की कोशिश है। इन प्रतीकों के आधार पर देखने पर नाटक स्पष्ट रूप से आधुनिक नजर आता है। इस नाटक की पृष्ठभूमिभले ही ऐतहासिक हो लेकिन समस्याएँ आधुनिक हैं।

स्कंदगुप्त नाटक का नायक स्कंदगुप्त राजनीतिक दुरभिसंधियों से त्रस्त है। राजमाता तथा उसका सौतेला भाई उसे शासन से जतिनी जल्दी हो सके उतने जल्दी हटाना चाहते हैं। आधुनिक समाज में भी किसी भी तरह सत्ता प्राप्त करने की यह प्रवृत्ति देखी जा सकती है। इसमें दर्शाई गई बौद्ध-हिंदू की सांप्रदायिकता की समस्या हिंदू मुस्लिम सांप्रदायिकता के रूप में वदियमान है और देश का एक वभिजन कराने के बाद भी पूर्णतः शांत नहीं हुई है।

देश में कषेत्रवाद की समस्या आज पहले से कहीं भीषण रूप धारण कर रही है प्रसाद ने अपने नाटक में केंद्र-राज्य के समरसतापूर्ण संबंधों के रूप में इसके समाधान का उपाय सुझाया है।

स्कंदगुप्त में इन सभी आधुनिक समस्याओं की उपस्थिति व इनके समाधान के संकेत तो इस नाटक को आधुनिक बनाते ही हैं। परंतु इस नाटक को आधुनिक बनाने वाला सबसे बड़ा तत्व है इस नाटक में प्रसाद द्वारा प्रतपादित जीवन दृष्टि प्रसाद अपने नाटक के माध्यम से जीवन के वास्तविक उद्देश्य भी प्रतपादित करते हैं। मानव आज भी आंतरिक वषिमताओं का शिकार है। जैसे-जैसे वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से कटता जा रहा है वैसे-वैसे यह आंतरिक वषिमता बढ़ती जा रही है। इस वषिमता के उत्तर के रूप में प्रसाद समरसता युक्त आनंदमूलक शांत रस को प्रस्तावित करते हैं।

संवेदना के साथ-साथ शलिप के स्तर पर भी स्कंदगुप्त एक आधुनिक नाटक है। इस प्रकार सभी कसोटियों पर कथा के धरातल पर ऐतहासिक होते हुए भी स्कंदगुप्त एक आधुनिक नाटक है।